स्त्री और पुरुष एक गाड़ी के दो पहिए हैं। जब तक उनमें आपसी तालमेल और बराबरी नहीं होगी, गाड़ी ठीक से नहीं चल सकती। यह बात चाहे कितनी ही पुरानी और घिसीपिटी लगे पर है पूरे सौ पैसे खरी। इसलिए जहां एक तरफ औरत की चेतना और शिक्षा की बात हम करते हैं, वहीं पुरुषों की बात करना भी ज़रूरी है।

औरतों की चेतना के साथ अगर पुरुष कदम न मिला सके तो तनाव और टकराहट बढ़ेगी। सच्चाई के रास्ते पर टकराहट से डर नहीं। लेकिन समाज में तनाव और टकराव पैदा करना मक़सद नहीं है।

बेहतर यही है कि पुरुष भी समय के साथ अपने रवैयों में बदलाव लाएं ताकि समाज में शांतिपूर्ण बदलाव आ सके। ऐसा बदलाव जो न सिर्फ उन दोनों के भले के लिए हो, बल्कि पूरे समाज, देश और आने वाली पीढ़ियों के भले के लिए हो।

हम मानते है कि किसी सत्ताधारी के लिए अपनी सत्ता छोड़ना आसान नहीं है। परंतु समझदारी इसी में है कि बदलते समय के साथ राज़ीखुशी बदला जाए। वरना सत्ता छीन ली जाती है। मन-मुटाव और दुश्मनी पैदा होती है। किसी भी समूह को अनंतकाल के लिए शोषित और दबा हुआ रखना संभव नहीं है। दोस्ती और सहयोग का रास्ता ही आज की मांग है। एक क़दम हम बढ़े हैं, एक कदम आप आइए। मिल कर इस दुनिया को एक बेहतर दुनिया बनाएं।

—वीणा शिवपुरी